जब मसीही लोग काम को जाते हैं

(6:5-9)

मसीही होने का अर्थ है कि मसीह हमारे जीवन के हर भाग को आकार देता है, जिसमें हमारे काम करने का ढंग भी शामिल है। पौलुस ने दासों को अपने स्वामियों के साथ काम करने के सम्बन्ध में कर्मचारियों के लिए कुछ सहायक परामर्श दिए हैं।

> हे दासो, जो लोग शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, अपने मन की सीधाई से डरते, और कांपते हुए, जैसे मसीह की, वैसे ही उनकी भी आज्ञा मानो। और मनुष्यों को प्रसन्न करने वालों की नाईं दिखाने के लिए सेवा न करो, पर मसीह के दासों की नाईं मन से परमेश्वर की इच्छा पर चलो। और उस सेवा को मनुष्यों की नहीं, परन्तु प्रभु की जानकर सुइच्छा से करो। क्योंकि तुम जानते हो, कि जो कोई अच्छा काम करेगा, चाहे दास हो, चाहे स्वतन्त्र; प्रभु से वैसा ही पाएगा। और हे स्वामियो, तुम भी धमकियां छोड़कर उन के साथ वैसा ही व्यवहार करो, क्योंकि जानते हो, कि उन का और तुम्हारा दोनों का स्वामी स्वर्ग में है, और वह किसी का पक्ष नहीं करता (इफिसियों 6:5-9)।

इन आयतों को ''आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ'' (5:18) की पौलुस की आज्ञा के संदर्भ में समझा जाना चाहिए। पौलुस ने मसीही लोगों को परमेश्वर के पवित्र आत्मा के प्रभाव में जीने के लिए कहा। इसका अर्थ परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण करना है। इसके लिए उसके वचन को अपने ज़ीतर आने देना है। पौलुस ने आत्मा से परिपूर्ण होने के परिणामों की कुछ सूची ज़ी बताई: गीतों, भजनों तथा आत्मिक गीतों के द्वारा आत्मिक संचार; हर बात के लिए परमेश्वर को धन्यवाद; और एक दूसरे के अधीन होना। इस अधीन होने में पति-पत्नी, माता-पिता और बच्चे, गुलाम और मालिक सब शामिल हैं।

संदर्भ को न छोड़ें। काम के स्थान के लिए निर्देश आत्मा से परिपूर्ण होने की आज्ञा से ही आते हैं। अन्य शब्दों में, हम में से कोई ज़ी मसीही लोगों को दिए गए काम को करने में नाकाम होकर परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मसीही होने का दावा नहीं कर सकता। मसीही लोग आत्मा से परिपूर्ण अपने जीवन को वफ़ादार कर्मचारियों के रूप में सेवा करके दिखाते हैं।

वफ़ादार कर्मचारी

पौलुस ने विशेष तौर पर दासों तथा स्वामियों के सम्बन्ध की बात की। उस ज़माने में, ऐसे ही काम होता था। विस्तार देकर, हम इन सिद्धांतों को आधुनिक रोज़गार देने वाले या नियोज़्ता/कर्मचारी सम्बन्ध पर लागू करेंगे। पौलुस ने कर्मचारियों के लिए चार सुझाव दिए।

1. *आज्ञा मानने वाले बनें।* पौलुस ने कहा, ''हे दासो, जो लोग शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, ... उनकी भी आज्ञा मानो'' (6:5)। ऐसा व्यवहार बना रहना चाहिए। पौलुस ने क्रिया के एक काल का इस्तेमाल किया जो निरन्तर आज्ञा मानने पर ज़ोर देता है। पौलुस के मन में नियोज़्ताओं के निर्देशों तथा आग्रहों को बिना रोक के मानने तथा उनसे सहमत होने की बात थी जब तक कोई नियोज़्ता किसी गैर कानूनी, अनैतिक या परमेश्वर की प्रकट इच्छा के विरुद्ध न कहे। कुछ नियोज़्ता अतार्किक, नासमझ, काम को न जानने वाले, कठोर और मूर्ख ज़ी हो सकते हैं; परन्तु मसीही कर्मचारियों को तन-मन से अपने नियोज़्ताओं की सेवा करनी चाहिए। 1 पतरस 2:18-20 में हम पढ़ते हैं,

> हे सेवको, हर प्रकार के भय के साथ अपने स्वामियों के आधीन रहो न केवल भलों और नम्रों के, पर कुटिलों के भी। ज़्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके अन्याय से दुख उठाता हुआ ज़्लेश सहता है, तो यह सुहावना है। ज़्योंकि यदि तुम ने अपराध करके घूसे खाए और धीरज धरा, तो इसमें ज़्या बड़ाई की बात है? पर यदि भला काम करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है।

लोग हमारे संदेश पर अधिक ध्यान नहीं देंगे यदि उन्हें हमारे काम पसन्द न आएं। वे हमारी नहीं सुनेंगे यदि हम काम पर शिकायत करने वाले हैं। जब तक हम दूसरों के लिए काम करते हैं, तब तक हमें आज्ञाकारिता तथा समर्पित मन से कोशिश करनी चाहिए।

2. *आदर योग्य बनें।* पौलुस ने कहा, ''हे दासो, जो लोग शरीर के साथ हमारे स्वामी हैं, अपने मन की सीधाई से डरते और कांपते हुए ... उनकी ज़ी आज्ञा मानो।'' मसीही कर्मचारियों को आदर योग्य बनना चाहिए, नियोज़्ता चाहे आदर लेने वाला हो या न। बात व्यज़्ति की नहीं, बल्कि परमेश्वर की योजना की है। परमेश्वर की योजना अधिकार वालों के अधीन होने की है। परमेश्वर ने यह योजना जीवन के ताने में बनाई है। यदि लोग अधिकार के सिद्धांत के विरुद्ध विद्रोह करने लगें तो समाज नहीं चल सकता। पति-पत्नी, माता-पिता और बच्चे, नियोज़्ता या कर्मचारी, प्रधान अधिकारी और उसके अधीन सब लोगों पर यह बात लागू होती है। यदि हम इसकी उपेक्षा करते हैं, तो बहुत सी समस्याएं खड़ी हो जाएंगी। वफ़ादार या विश्वासी मसीही परमेश्वर के ढंग का सज़्मान करने के लिए ही इन बातों को मानता है। ऐसा वह बिना शिकायत, अलोचना या विद्रोह किए बड़ी गंज़ीरता से करता है।

3. *अपना उद्देश्य शुद्ध रखें।* नियोज़्ता के आगे झुकने का उद्देश्य ज़्या है? पौलुस ने कहा कि परमेश्वर हमसे सांसारिक स्वामियों की आज्ञा मानने की अपेक्षा वैसे ही करता है जैसे मसीह की आज्ञा मानने की (6:5)। जीवन में हम जो ज़ी करते हैं, चाहे वह काम ही

हो, उससे प्रजु की महिमा होनी चाहिए: ''सो तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो'' (1 कुरिन्थियों 10:31); ''और वचन से या काम से जो कुछ ज़ी करो सब प्रजु यीशु के नाम से करो और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो'' (कुलुस्सियों 3:17); ''और जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझ कर कि मनुष्यों के लिए नहीं परन्तु प्रभु के लिए करते हो। ज़्योंकि तुम जानते हो कि तुज़्हें इस के बदले प्रभु से मीरास मिलेगी: तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो'' (कुलुस्सियों 3:23, 24)।

आपको लग सकता है कि आपके काम का महत्व नहीं है। हो सकता है कि आपको अपना काम पसन्द न हो। यह भी हो सकता है कि आपको अपना नियोज़्ता पसन्द न हो। परन्तु आप परमेश्वर के उस कार्य को एक ज़ेंट के रूप में देखकर प्रभु की महिमा कर सकते हैं। परमेश्वर को महिमा देने के लिए ही काम करें। आपका अपने काम तथा अपने नियोज़्ता के प्रति समर्पित होने का यही कारण हो।

4. *श्रेष्ठता के लिए समर्पित हों।* हमारे बात करने या काम करने का उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना है, इसलिए हमें काम के स्थान पर श्रेष्ठता के प्रति समर्पित होना चाहिए। पौलुस ने इस बात पर मसीह को सामने रखकर ज़ोर दिया। हमें सांसारिक स्वामियों की आज्ञा उसी तरह माननी चाहिए जैसे हम मसीह की मानते हैं (6:5)। आयत 6 में उसने आगे कहा, ''मनुष्यों को प्रसन्न करने वालों की नाईं दिखाने के लिए सेवा न करो, पर मसीह के दासों की नाईं मन से परमेश्वर की इच्छा पर चलो।'' श्रेष्ठता के लिए यह बिनती आयत 7 में ज़ी मिलती है: ''और उस सेवा को मनुष्यों की नहीं, परन्तु प्रभु की जानकर सुइच्छा से करो।''

मुझे हाई स्कूल में शारीरिक शिक्षा की ज़्लास याद है। हमारे लिए हर रोज ज़्लास में व्यायाम करना आवश्यक होता था। मास्टर जी छात्रों के बीच में खड़े होकर एक बार केवल आधे छात्रों को ही देख पाते थे। जब वह दायें देखते, तो दाईं ओर के छात्र ज़ोर ज़ोर से व्यायाम करने लगते परन्तु बाईं ओर के छात्र व्यायाम करना बंद कर देते थे। जब वह बायें देखते, तो बाईं ओर के छात्र व्यायाम करने लगते, और दाईं ओर के छात्र थोड़ा सुस्ता लेते थे। काम की जगह पर ज़ी कज़ी-कभी ऐसा ही होता है। कुछ कर्मचारी केवल तज़ी ज़ोर लगाते हैं, जब बॉस सामने हो। वे श्रेष्ठता के लिए समर्पित नहीं हैं।

उत्पज़ि अध्याय 1 हमें दिखाता है कि परमेश्वर एक काम करने वाला है। उसने संसार को बनाया। अपने काम में श्रेष्ठता के लिए वह ज़ी समर्पित था। ''तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो ज़्या देखा कि वह बहुत ही अच्छा है'' (उत्पज़ि 1:31)। मसीही लोगों को पूरे परिश्रम से और मन लगाकर काम करना चाहिए। उन्हें चाहिए कि जहां ज़ी काम करें लोग उन्हें समर्पित कर्मचारियों के रूप में जानें। जॉन स्टॉट ने सुझाव दिया है:

> गृहिणी भोजन ऐसे तैयार कर सकती है जैसे खाने के लिए यीशु आने वाला हो,
> या घर की सफ़ाई ऐसे रज़ सकती है जैसे यीशु सज़्मानित अतिथि बनने वाला हो।

शिक्षकों के लिए बच्चों को पढ़ाना, डॉक्टरों के लिए मरीज़ों का इलाज करना और नर्सों के लिए उनकी देखभाल करना, वकीलों के लिए अपने ग्राहकों की सहायता करना, दुकान पर काम करने वालों के लिए ग्राहकों की सेवा करना, अकाउंटेंटों के लिए बही खाते लिखना और सचिवों के लिए पत्र टाइप करना, ऐसे हो सकता है जैसे वे हर बात में यीशु मसीह की सेवा कर रहे हों।[1]

लिहाज़ रखने वाले रोज़गार दाता

नियोज़्ताओं के रूप में विचारशील होने पर मसीही लोग आत्मा से अपने परिपूर्ण होने को दिखाते हैं। संक्षेप में, ध्यान दें कि पौलुस स्वामियों या नियोज़्ताओं से ज़्या कहता है: ''और हे स्वामियो, तुम भी धमकियां छोड़कर उन के साथ वैसा ही व्यवहार करो, ज़्योंकि जानते हो, कि उन का और तुज़्हारा दोनों का स्वामी स्वर्ग में है और वह किसी का पक्ष नहीं करता'' (6:9)।

पौलुस ने स्वामियों के लिए तीन गाइडलाइन दीं जिनका पालन आज नियोज़्ताओं के लिए करना आवश्यक है:

1. *आज्ञाकारी बनें।* उसने कहा, ''हे स्वामियो, तुम ज़ी ... वैसा ही व्यवहार करो।'' ''वैसा ही'' से मुझे कर्मचारियों के सामने रखे गए लक्ष्य या उद्देश्य की तरह ही वचन और काम में प्रभु को महिमा देने के लिए लगता है। एक नियोज़्ता के रूप में परमेश्वर आपको यह पहली ज़िज़्मेदारी देता है। वह आपसे इस प्रकार अगुआई करने की अपेक्षा करता है जिससे परमेश्वर की महिमा हो, उन्हें जो जवाबदेह हों परमेश्वर के मापदण्डों के अनुसार निर्देश देने के लिए, सुनहरी नियम के अनुसार काम करने के लिए (देज़ें लूका 6:31), और कर्मचारियों के साथ सज़्मान से व्यवहार करने की अपेक्षा करता है ताकि उन्हें उस प्रभु का अपमान करने का कारण न मिले,जिसकी आप सेवा करते हैं।

2. *दयालु बनें।* कठोरता या धमकी वाला व्यवहार न करें। ईश्वरीय अगुआई के लिए अपने आप को बॉस दिखाने की आवश्यकता नहीं है। एक मसीही नियोज़्ता कज़ी गाली गलौज देने वाला या बेलिहाज़ नहीं, बल्कि कोमल मन तथा सज़्भाल करने वाला होना चाहिए। इसका अर्थ आवश्यक होने पर कठोर तथा दृढ़ होने से रुकना नहीं बल्कि अपने व्यवहार तथा आचरण को मसीह के अनुसार चलाना है।

3. *विनम्र बनें।* पौलुस ने यह लक्ष्य ठहरा दिया: ''ज़्योंकि तुम जानते हो कि जो कोई जैसा काम करेगा, चाहे दास हो, चाहे स्वतन्त्र; प्रज़ु से वैसा ही पाएगा।'' सब न्यायाधीशों का निष्पक्ष न्याय करने वाला देख रहा है कि आप नियोज़्ता बनकर ज़्या कर रहे हैं। वह कर्मचारियों के बुरे व्यवहार को केवल इसलिए नज़अन्दाज नहीं करेगा कि आप उनके बॉस हैं। वह हमें दूसरों के साथ किए गए हमारे व्यवहार के अनुसार ज़िज़्मेदार ठहराता है।

सारांश

रविवार के मसीही को सोमवार का मसीही ज़ी बनना चाहिए। आराधना के समय मसीही बनने वाले को काम के समय ज़ी मसीही बनना चाहिए।

हम में से अधिकतर लोग अलग-अलग काम करते हैं। हम में से कुछ लोग काम करने वाले हैं, जबकि कुछ लोग रोज़गार देते हैं। हम में से हर एक को यह सोचना चाहिए कि परमेश्वर का वचन ज़्या कहता है। अपने आप से ये प्रश्न पूछें:

- ''ज़्या मैं काम पर अपने व्यवहार से परमेश्वर को महिमा देता हूं?''
- ''ज़्या मैं श्रेष्ठता पाने को समर्पित हूं?''
- ''ज़्या मैं दूसरों के प्रति दयालु और लिहाज़ रखने वाला हूं?''
- ''ज़्या मैं अपने से बड़े अधिकारियों के प्रति ईमानदार, वफ़ादार और उनका सज़्मान करने वाला हूं?''
- ''ज़्या मेरे काम के कारण यीशु मुझ से कहेगा 'शाबाश'?''

ईमानदारी से इन प्रश्नों का उज़र देने के बाद, आप कुछ पापों को मानने और परमेश्वर से क्षमा मांगने की इच्छा कर सकते हैं। हम अपने सब कामों में चाहे वह कैसा भी काम ज़्यों न हो, अपने आप को परमेश्वर को महिमा देने के लिए समर्पित करें।

टिप्पणी

[1]जॉन आर. डज़्ल्यू स्टॉट, द *मैसेज ऑफ़ इफिसियंस: गॉड'स न्यू सोसाइटी,* द बाइबल स्पीज़्स टुडे, सामा. संस्क. जॉन आर. डज़्ल्यू स्टॉट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1979), 252.